कथा सरिता

समानता का एहसास

एक बुजुर्ग पिता की दो बेटियां थी। दोनों की शादी हो चुकी थी। उनमें से एक का विवाह एक कुम्हार से हुआ और दूसरी का एक किसान के साथ। कई दिनों से वह अपनी बेटियों से नहीं मिला था। सो, उसने मिलने का कार्यक्रम बनाया और पहुंच गया उनसे मिलने। पहली बेटी से हालचाल पूछा तो उसने कहा कि इस बार हमने बहुत परिश्रम किया है और बहुत सामान बनाया है। बस यदि वर्षा न आए तो हमारा कारोबार खूब चलेगा। बेटी ने पिता से आग्रह किया कि वो भी प्रार्थना करे कि बारिश न हो। फिर पिता दूसरी बेटी से मिला जिसका पति किसान था। उससे हालचाल पूछा तो उसने कहा कि इस बार बहुत परिश्रम किया और बहुत फसल उगाई है, परंतु वर्षा नहीं हुई है। यदि अच्छी बरसात हो जाए तो खूब फसल होगी। उसने पिता से आग्रह किया कि वह प्रार्थना करे खूब बारिश होने की। एक बेटी का आग्रह था कि पिता वर्षा न होने की प्रार्थना करे और दूसरी का इसके विपरीत कि जमकर बारिश हो। पिता बड़ी उलझन में पड़ गया। समाधान क्या हो ? पिता ने बहुत सोचा और दोबारा से अपनी दोनों पुत्रियों से मिला। उसने बड़ी बेटी को समझाया कि यदि इस बार वर्षा नहीं हुई तो तुम अपने लाभ का आधा हिस्सा अपनी छोटी बहन को देना। फिर छोटी बेटी के पास गए और उनको मिलकर समझाया कि यदि इस बार खूब वर्षा हुई तो तुम अपने लाभ का आधा हिस्सा अपनी बड़ी बहन को देना। दोनों बेटियों को अपनी समानता का एहसास हुआ। तभी दोनों पुत्रियों ने कहा - पिता जी, जो कुदरत करेगी, वही ठीक होगा।

मैं धर्म हूँ

जनक के राज्य में किसी नागरिक से कोई अपराध हो गया। जनक ने उसे राज्य से निष्कासित होने का दंड दे दिया। नागरिक ने पूछा, `महाराज, आप यह बता दें कि आपका राज्य कहां तक है, ताकि मैं उससे बाहर निकल सकूं।' यह सुनकर राजा जनक सोच में पड़ गए कि आखिर उनके राज्य की सीमा है कहां! पहले तो उन्हें सम्पूर्ण पृथ्वी पर अपना अधिकार प्रतीत हुआ और फिर केवल मिथिला नगरी पर। आत्मज्ञान के झोंके में वह अधिकार घटकर प्रजा तक और फिर उनके शरीर तक सीमित हो गया। अंत में उन्हें अपने शरीर पर भी अधिकार का भान नहीं हुआ। वे बोले, `आप जहां चाहें रहें, मेरा अधिकार कहीं नहीं है।' नागरिक को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने पूछा, `इतनी बड़ी पृथ्वी के अधिकारी होते हुए भी आप सभी वस्तुओं के प्रति कैसे तटस्थ हो गए?' राजा जनक बोले, `संसार के सभी पदार्थ नश्वर हैं। शास्त्रों के अनुसार न तो कोई अधिकारी सिद्ध होता है और न कोई अधिकार योग्य वस्तु ही है। अतः मैं किसे अपने अधिकार में समझूं? जहां तक पृथ्वी का अधिकारी समझने की बात है, मैं स्वयं के लिए कुछ नहीं करता। जो भी करता हूँ, वह देवता, अपने पितर और अतिथि सेवा के लिए करता हूँ। इसलिए पृथ्वी, जल, वायु और प्रकाश पर मेरा अधिकार कैसे हुआ?'राजा जनक के मुख से यह बात सुनते ही नागरिक ने अपना चोला बदल लिया और उनसे बोला, `महाराज, मैं धर्म हूँ। आपकी परीक्षा लेने के लिए सामान्य नागरिक के वेश में आपके राज्य में वास कर रहा था। आपके विचार सुनकर अब मैं तय कर चुका हूँ कि इस धरती पर आप ही सर्वश्रेष्ठ राजा हैं।'

जैसी करनी वैसी भरनी

एक गांव में रहीम नाम का एक किसान रहता था। वह बड़ा सरल, मिलनसार और मेहनती था। गांव के सभी लोग उसे पसंद करते थे क्योंकि वह लोगों की मदद करने को हरदम तैयार रहता था। अपनी मेहनत से उगाई फसल बेचकर वह अच्छी-खासी कमाई कर लेता था। उसी गांव में दूसरा किसान रफीक भी रहता था। रफीक और रहीम के खेत आस-पास ही थे। यह बात रफीक को बिल्कुल अच्छी नहीं लगती थी कि सभी गांव वाले रहीम को अच्छा मानते थे। वह रहीम से नफरत करता था। रहीम तो हमेशा अपने खेतों पर काम करता रहता था, लेकिन रफीक इधर-उधर घूमने में ही समय निकाल देता। वह हमेशा ऐसे मौके की तलाश में रहता था जिससे वह रहीम को नुकसान पहुंचा सके। एक साल रहीम के खेत में बहुत अच्छी फसल पैदा हुई। यह देखकर रफीक को बड़ी जलन हुई। फसल कटने से कुछ दिन पहले एक दिन मौका पाकर उसने रहीम के खेत में आग लगा दी। आग फैलने लगी तो रफीक का खेत भी जलने लगा। गांव वालों को पता चला कि रहीम के खेत में आग लगी है तो वे जी-जान से आग बुझाने में जुट गए। रहीम की आधी फसल जलने से बच गई, लेकिन रफीक के खेत की ओर चलने वाली तेज़ हवा के कारण आग ने उसकी पूरी फसल चौपट कर डाली। लोग चाहकर भी रफीक की मदद नहीं कर पाए। यह उसकी लगाई हुई आग का परिणाम था जो उसे ही भुगतना पड़ा। वह अपना सिर पकड़ कर बैठ गया। अब उसकी समझ में आ गया था कि दूसरों के लिए गड्ढ़ा खोदने वाला पहले खुद उसमें गिरता है।

काठमाण्डू-नेपाल। नेपाल कम्युनिस्ट पार्टी एमाले के अध्यक्ष के.पी. शर्मा ओली को ज्ञानचर्चा के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. राज दीदी। साथ हैं ब्र.कु. किशोर, ब्र.कु. रामसिंह तथा ब्र.कु. तिलक।

जयपुर-कमल अपार्टमेंट। नगरपालिका के चेयरमैन चन्द्रभारिया जी को ज्ञानचर्चा के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. स्वाति।

नुवाकोट-नेपाल। भूकम्प पीड़ितों को राहत सामग्री बांटने से पूर्व ईश्वरीय संदेश देते हुए ब्र.कु. किशोर, ब्र.कु. ललिता, ब्र.कु. विजय व अन्य।

दिल्ली-आर.के. पुरम। ब्र.कु. युवाओं के लिए आयोजित योग भट्ठी कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. अनीता। साथ हैं ब्र.कु पीयूष। सभा में ब्र.कु. ज्योति, ब्र.कु. मनीषा व ब्र.कु. भाई।

गया-ए.पी. कॉलोनी। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित हैं एम.एस.वाय कॉलेज के प्रिन्सीपल विजय जी, ब्र.कु. सुनीता, मीरा बहन व सुधा डेरी के एम.डी. कौशल जी।

कानपुर-केशव नगर। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए पूर्व मंत्री बालचन्द्र मिश्र, राजयोगिनी ब्र.कु. दुलारी, ब्र.कु. निधि, ब्र.कु. वीणा, ब्र.कु. अरुण, ब्र.कु. दीपा व ब्र.कु. शशि।